उपसंहार

उ प सं हा र

श्रीमती रजनी पनिकर का समग्र साहित्य उनकी सचेत एवं जागरूक लेखनी का एक ऐसा प्रमाण है, जो नारी के उद्धार, प्रगति और स्वातंत्र्य को एक नितांत नई दिशा प्रदान करता है। उनका समग्र साहित्य इसी बात का ठोस प्रमाण प्रस्तुत करता है।

भारतीय परिवेश में पली नारी को रजनी जी ने नवीन दृष्टिकोण से देखा। रजनी जी ने भारतीय नारी में आदर्शों की स्थापना की और पुरातन आदर्शों एवं मूल्यों को जड़ से उठाकर फेंक देने का स्तुत्य प्रयास किया। नवीन आदर्शों की स्थापना करते समय परंपरा से मिले संस्कार कहीं भी उनके भावों के साथ टकराते नहीं। अपने समग्र साहित्य में प्रगतिशील दृष्टिकोण को अपनाते हुए भी रजनी जी भारतीय परंपरा से पृथक नहीं हुई।

रजनी जी ने युगचेतना और सामाजिक गतिविधियों को भली-भाँति पहचाना। समाज की नब्ज को अच्छी तरह से परखा। इसी कारण वह भारतीय परिवेश में पली नारी को योग्य दिशा देने में सफलता प्राप्त कर चुकी। स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी की स्थिति एवं गति में काफी परिवर्तन आ गया है। वह पुरुष के कंधे-से-कंधा मिलाकर अपनी समर्थता

एवं चतुरता का परिचय दे रही है। फिर भी समाज की दृष्टि में वह ऊँची उठ नहीं पाई। समाजने सदैव उसका अपमान और प्रतारना से ही स्वागत किया। मातृत्व एवं पत्नीत्व के कठघरे से बाहर पड़ती नारी की आकांक्षाओं का समाजने गला घोंट देने का ही प्रयत्न किया है। आज भी समाज चाहता है कि नारी चार दीवारी में बंद रहे। त्याग, समर्पण और सेवा की खातिर अपना अनमोल जीवन लुटाये। रजनी जी ने त्याग एवं समर्पण में लिपटी नारी की घायलता को पहचाना और अपने साहित्यद्वारा उसे न्याय देने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

स्वातंत्र्योत्तर कथाकारों में रजनी पनिकर का व्यक्तित्व बहु-चर्चित रहा है। उनके व्यक्तित्व में अनेक विरोधी तत्वों का समिश्रण होकर भी उसमें एक सामंजस्य का मार्ग प्रशस्त करता है। रजनी जी का व्यक्तित्व विचारकिमुखिता है। उनकी विद्रोही और आस्थावादी दृष्टि, नारी सुलभता, कोमलता, ममता, करुणा की भावना, सूक्ष्म-चसौंदर्य बोध और सच्ची अनुभूति, अंतर्मुखी वृत्ति, लोकमंगल की भावना और मानवता वाद आदि उनके व्यक्तित्व के रंग खुला देते है। ऐसे फक्कड़ व्यक्तित्व के कारण उनके कृतित्व में नारी की समस्याएँ, उसका शोषण, उसकी दुर्दशा, उसकी पीडाएँ आदि का वर्णन सफलता से दिखाई देता है। क्योंकि अन्याय का विरोध करने की भावना उसके नस-नस में थी। एक सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत उच्च-मध्यवर्गीय परिवार में उन्होंने जन्म लिया, पितामह तथा बड़े भाई से लेखनकार्य की प्रेरणा ग्रहण की। दादी-माँ के क्रांतिकारी विचारों को आत्मसात करके रजनी जी ने साहित्यिक क्षेत्र में कदम रखा। अपने व्यक्तित्व के अनुरूप पात्रों को जन्म देकर उन्हे प्रत-प्रतिष्ठा से न्याय देने का काम किया। जाने-अनजाने उनके व्यक्तित्व के ये सुनहरे रंग उनके कृतित्व में पनपते है।

रजनी जी का संपूर्ण उपन्यास साहित्य नारी की पीडा को अभिव्यक्त करने, उसकी विवशताओं और समस्याओं को वास्तविक स्तर पर लाकर संसार के सामने रखने और पुरुष के परिपेक्ष्य में नारी के स्थान को विविध रूपों से उजागर करने की उद्दाम भावना से पूरित है। लेखिका ने अपने वर्तमान युग की भारतीय नारी को स्पष्टतासे अपने कुशल कलम-द्वारा प्रगट करने का सफल प्रयास किया है। उनके सभी उपन्यास नारी के सामाजिक, आर्थिक और भावात्मक समस्याओंपर आधारित है। उन्होंने अपने सभी

उपन्यासों में नारी को ही प्रधानता दी है। पुरुष पात्रों को केवल कथा विकास के लिए और नारियों के गुण-दोषों का वर्णन करने के लिए उनकी उपस्थिति दिखाई है। सभी उपन्यासों में नारी को ही अपनी औपन्यासिक कृति की नायिका बनाया है।

स्वातंत्र्योत्तर काल की ज्वलंत समस्याएँ है ---- प्रेम , विवाह और नौकरी इन तीनों समस्याओं को लेकर रजनी जी का साहित्य आगे बढ़ता है। "महानगर की मीता" उपन्यास में तलाक समस्या का सफल चित्रण हुआ है। तो "एक लड़की दो रुप" की माला की बारात थोडा दहेज देखकर वापस चली जाती है। इसी प्रकार मीता , माला , नीना , आशा , श्वेता और सोनाली आदि नायिकाओं द्वारा नौकरी पेशा नारी की समस्याओं को उजागर करने का सफल प्रयास लेखिकाने किया है। "काली लड़की" , "प्यासे बादल" और "दूरियाँ" ये तीनों उपन्यासों की समस्याएँ हिन्दी उपन्यास साहित्य में अलग-अलग दिखाई देती है। "काली लड़की" में लेखिका ने रानी जैसी काली-कलूटी लड़की को इस कृति की हिरोईन बनाया है , तो "प्यासे बादल" की नायिका एक भिखारी को गोद ले लेती है और "दूरियाँ" की नायिका नमिता कुँआरी माँ बनना चाहती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि रजनी जी का साहित्य बहुमुखी और प्रतिभासंपन्न है। रजनी जी ने सभी समस्याओं को हल करते समय नौकरी पेशा नारी की समस्याओंपर [illegible] अपना [illegible] अधिक लक्ष केंद्रित किया है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि लेखिका स्वयं आकाशवाणी में निर्देशक के उच्च पद पर काम करती थी। अत: इतना ही कहना उचित है कि नौकरी पेशा-नारी ही , नौकरी पेशा-नारी की समस्याएँ समझ सकती है।

वैदिक काल में नारी का सामाजिक , आर्थिक धार्मिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में अत्यधिक उत्कर्ष नजर आता है। लेकिन नारी का यह गौरवमयी स्थान मध्य काल में पतन की ओर झुक गया। पुरुष की अहंता प्रधान प्रवृत्तिने उसे सामाजिक बंधनों की बेड़ियाँ डालकर चार दीवारों में बंद कर दिया गया। लेकिन अंग्रेजो के आगमन के साथ उनके भाग्य ने करवट ली। अनेक समाज सुधारकोंने , अनेक संस्थाओंद्वारा नारी सुधार के लिए विशेष प्रयत्न किये। नारी की चारों ओर लिपटी कुप्रथाओं की जंजीरे तोडकर उसे मुक्त करने का बीड़ा उठाया। शिक्षा के हर द्वार नारी के लिए खुले किए गये। नारी स्वतंत्रता के लिए कानून बनाये गये। और नारी को खुली हवा में साँस

लेने का मौका दिया गया। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि आधुनिक परिवेश में भी समाज एवं पुरुष वर्ग का नारी के प्रति देखने का दृष्टिकोन काफी उदार नहीं है। कानून और सभ्यताने आश्रय दिया फिर भी आज की नारी अनेक समस्याओं से झगड़ रही है, जैसे — दहेज प्रथा, अतिशिक्षीत लड़कियों का विवाह, समाज सेवा का पुजारी, तलाक, विधवा विवाह, नौकरी पेशा नारी और प्रेम विवाह या आंतरजातिय विवाह आदि समस्याएँ है। इतनी सारी समस्याएँ होते हुए भी मध्ये काल की अपेक्षा आधुनिक परिवेश में नारी की स्थिति एवं गति में ज्यादा सुधार हुआ है। परंतु जबतक युवा वर्ग, पुरुष और समाज उसके प्रति अपना उदार दृष्टिकोन नहीं अपनायेगा तब तक नारी सही अर्थ में स्वतंत्र नहीं हो पायेगी।

रजनी जी के सभी उपन्यास नारी की आर्थिक एवं भावात्मक समस्याओंपर आधारित है। स्वातंत्र्योत्तर-कालीन सामाजिक ज्वलंत प्रश्न है —प्रेम, विवाह, तलाक और नौकरी इन चारों प्रश्नों से उत्पन्न समस्याओंपर रजनी जी का साहित्य आधारित है। विवाह और मातृत्व के बारे में उनके विचार उन्हीं के शब्द में —— ————"स्त्री के व्यक्तित्व के साथ उसका मातृत्व जुड़ा है। लेकिन इसके लिए विवाह की बेडियाँ क्या जरूरी है। आप माँ बनना चाहती है तो जरूर बनिए। लेकिन अपने बच्चे का पालन-पोषण करने की क्षमता आपमें होनी चाहिए। इसके लिए किस पुरुष की छत्र-छाया जरूरी नहीं। अग्नी की परिक्रमा किए और गुलामी की जंजीर में जकड़े और क्या आप मातृत्व का बोझ उठा सकती है ? अगर नहीं तो माफ कीजिए, आप माँ बनने के काबिल नहीं" ।"[१]

रजनी जी के विचार परंपरा-प्रेमी, भारतीय परिवेश में पला पुरुष सहजता से पचा नहीं पायेगा। पुरुष ही क्या भारतीय नारी को भी रजनी जी के विचार काफी विचित्र महसूस होंगे। परंतु स्त्री जब एकान्त में आत्मपरिक्षण करेगी तो निश्चित ही रजनी जी के विचारों से सहमत होगी। आज नहीं तो कल रजनी जी के विचारों का समाज निश्चित ही स्वागत करेगा।

---

१) कुसुम वर्मा : लेखिका रजनी स्मृति अंक : पृ. २३.

रजनी जी ने ऐसे लकीर को छोड़कर व्यक्त किए विचार नारी को स्वतंत्र रूप से विचार करने के लिए विवश करेंगे। साथ ही रजनी जी ने ऐसे विचारों से नारी को पुरूष के समान अधिकार पाने के लिए योग्य, सक्षम और परिश्रमी होने के लिए ललकारा है। नारी को उसके अधिकार के लिए ही नहीं, उसके दायित्व का भी बोध करवाया है। स्त्री पुरूष की शारिरीक प्राकृतिक आवश्यकताओं को लेकर भी उनका कहना है ————"उनका पुरा होना स्वभाविक है। लेकिन यहाँ भी अगर पुरूष के लिए पूरी छूट है तो स्त्री के लिए क्यों नहीं हो सकती।"[1] निश्चित ही यह छूट स्त्री माँगेगी तो पुरूष आप ही आप सही रास्तेपर चलने के लिए मजबूर होगा। हाँ, ठीक तरह से चलेगा। इस दृष्टि से रजनी जी के विचार मौलिक ही है।

अंत में हम इतनाही कह सकते है कि रजनी जी की नारी त्यागमयी है फिर भी जागृत है। आधुनिक है फिर भी मर्यादित है। वह शिक्षित है, उच्छृंखल नहीं। सचेत है किन्तु एक आस्था से जुड़ी है। आशावादी है, निराशावादी नहीं। उसकी नारी भारतीय संस्कृति और परिवेश के भीतर रहकर नारी जाति के लिए पुरूष के समान अधिकार की माँग करती है। कहीं-कहीं रजनी जी के विचार परंपरागत आदर्शों को ढह देनेवाले जरूर है। परन्तु उससे उन्हें यही सिद्ध करना है कि जब पुरूष के समान हर क्षेत्र में नारी भी छूट माँगेगी तभी पुरूष रही ठिकाने पे आयेगा। नारी को उचित अधिकार देने में औदार्य दिखलायेगा। उनका संपूर्ण साहित्य ही स्त्री के उद्धार, प्रगति और पुरूष के समान अधिकार पाने के प्रति प्रेरित होकर सृजत संपन्न हुआ है। स्त्री केवल योनी नहीं है परन्तु, वह भी मानवी प्रतिष्ठित है, यह दिखलाने का सफल एवं सबल प्रयास ही उनका समग्र कृतित्व है।

उ प ल ब्धि याँ :-

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में जो प्रश्न उभर उठे थे, उन प्रश्नों के उत्तर उपलब्धियों के रूप में निम्नांकित है ————

साहित्यकार की रचनाओं को परखने के लिए उसके व्यक्तित्व को जानना बहुत जरूरी है। किसी भी साहित्यकार का कृतित्व उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है।

---

१) उषा वर्मा : लेखिका रजनी स्मृति अंक : पृ. २३.

व्यक्तित्व को जानने के लिए उसकी व्यक्तिगत जीवनानुभूतियों और संवेदनाओं को देखना आवश्यक होता है। रजनीजी का जन्म पंजाब के एक जमींदार घराने में हुआ। माँ ने मनौतियाँ मान-मानकर इस कन्यारत्न को प्राप्त किया। चार भाइयों की यह लाडली बहन बिलकुल राजदुलारी थी। उन्होंने अंग्रेजी विषय को लेकर एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। उसके उपरान्त हिन्दी में भी एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। रजनी जी हँसमुख, जिन्दादिल, संवेदनशील, फक्कड़, दृढ़निश्चयी, कार्यक्षम, प्रगतिकामी है। उसके जन्मजात गुणों के विकास में उसके पारिवारीक सदस्यों का भी बड़ा भारी सहयोग रहा।

रजनी जी का बाल्यकाल अपनी दादीमाँ के गोद में बड़े हँसी-खुशी से बीत गया। रजनी जी ने अपनी दादी-माँ से बाह्याडम्बर, मिथ्याचार और अंधश्रद्धा का विरोध आदि गुण अपनाये। उनकी औपन्यासिक कृतियों में स्थान-स्थानपर हमें इस विरोध के दर्शन होते है। रजनी जी की नायिकाएँ शिक्षित एवं सुसंस्कृत है फिर भी भारतीय संस्कृति से अवेष्टित हैं। जहाँ भी उन्हें बाह्याडम्बर तथा नकलीपन के दर्शन होते है, वे उनका खुलकर विरोध करती है। "बदलते रंग" की नायिका "आशा" श्रीमती चौधरी के घर के बदलते रंग से सख्त नफरत करती है। उनकी नारी में आत्म-सम्मान और स्वाभिमान है। आत्म-सम्मान और स्वाभिमान की भावना को यदि विवाह जैसा संस्कार ठेस पहुँचाता है तो उसकी नारी उसे भी नाकारती है। "महानगर की मीता" में यही आत्मसम्मान की भावना है, तो "काली लड़की" की रानी में स्वाभिमान है।

रजनी जी ने अपने फक्कड व्यक्तित्व के अनुसार ही नारी पर होते उअन्याय और अत्याचार का विरोध किया। अपनी समर्थ लेखनी से पुरुष वर्ग को ललकारा। हर क्षेत्र में पुरुष के लिए छूट है। अगर वैसी छूट नारी मांगेगी तो क्या पुरुष यह सह सकेगा? ऐसा बड़ा जटिल प्रश्न खड़ा करके उन्होंने पुरुष को सही रास्ते से चलने के लिए सचेत किया। उन्होंने अपने कतिपय उपन्यासों में नौकरीपेशा नारी के समस्याओं को उठाकर नारी को उसके अधिकारों के प्रति सजग किया। संपूर्ण नारी समाज को उपदेश किया कि साहस से काम लो, अपने अधिकारों का प्रयोग करना सीखो, सदियों की नींद से जागो।

रजनी जी अपने कृतित्व में नारी की समस्याएँ, उसका शोषण, उसकी दुर्दशा, उसकी पीडा का वर्णन करने में सफलता प्राप्त कर चुकी। क्योंकि अन्याय का विरोध करने

की भावना उसके नस-नस में थी। एक सुशिक्षित, सुसभ्य और सुसंस्कृत उच्च-मध्य - वर्गीय परिवार में उन्होंने जन्म लिया, पितामह तथा बड़े भाई से लेखनकार्य की प्रेरणा ग्रहण की, माँ के क्रांतिकारी विचारों को आत्मसात करके रजनीजी ने साहित्यक क्षेत्र में कदम रखा। अपने व्यक्तित्व के अनुरूप पात्रों को जन्म देकर उन्हें आत्म-प्रतिष्ठा न्याय देनेका काम किया।

रजनी जी ने अपनी अधिकतर कृतियों में नारी को ही प्रधानता दी है। उनका संपूर्ण कृतित्व भारतीय नारी की शोचनीय सामाजिक दशा के प्रति विद्रोह की भावना प्रदर्शित करता है। वह स्वयं सरकारी सेवा में थी। इसीलिए कार्यशील नारी की समस्याओं का उन्होंने समर्थता से अंकन किया। रजनीजी ने यह अनुभव किया कि भारतीय नारी अपने अस्तित्व को खो चुकी है। चतुर्दिक शोषण ने उसे परवश बना दिया है। सदियोंसे होते आये अन्याय को सहते-सहते उसे अन्याय सहने की आदत ही हो गयी है। अतएव नारी को अपने अस्तित्व और अधिकार के प्रति सजग करना नितान्त अनिवार्य है। वह अबला नहीं बल्कि सबला है। वह किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कम नहीं है। अर्थात नारी को उसकी शक्ति से परिचित करा देना काल की माँग है। रजनीजी ने लघुमात्रा में क्यों न हो यह जिम्मेदारी अपने कंधेपर उठा ली। रजनी जी नारी के अंतरंग को स्पष्टतासे खोल सकीं इसके भी कई कारण है। एक नारी ही नारी की भावनाओं का कुशलतापूर्वक अंकन कर सकती है। पुरुष लेखक कितना भी संवेदनशील हो उसका अनुभव वस्तुपरक रहेगा, आत्मपरक अनुभव वह हो ही नहीं सकता। नारी ही नारी जाति का जड़ से उद्धार कर सकती है।

रजनी जी स्वयं नारी होने के कारण नारी की अंतरंग भावनाओं को उजागर करने में सफलता प्राप्त कर चुकी। उन्होंने नारी की विभिन्न समस्याओं को अपनी साहित्यिक कृतियों में व्यंजित किया और उन समस्याओं के निराकरण के उपाय भी बतलाये रजनी जी के उपन्यासों में कार्यशील नारी की समस्या, असफल विवाह की समस्या, दहेज समस्या, पर-पुरुष या पर-स्त्री से प्रेम की समस्या, तलाक समस्या, समाजसुधार की समस्या, मुक्त प्रेम की समस्या आदि अनेक समस्याओं के दर्शन होते है। रजनी जी ने हर समस्या की ओर आधुनिक दृष्टिसे देखकर उसे सुलझाने का प्रयास किया है।

स्त्री में जागृति आने के कारण या अपने अधिकारों के प्रति सजग होने के कारण हमारे समाज में असफल विवाह की समस्या आम हो गई है। "पानी की दीवार", "काली लड़की", "प्यासे बादल", "मोम के मोती" और "एक लड़की दो रूप" आदि उपन्यासों में लेखिका ने असफल विवाह की समस्या को सफलता से चित्रित किया है। प्रत्येक उपन्यास में असफल विवाह के एक नवीन कारण है और उसे चित्रित कर समाज के सम्मुख उपस्थित करने में लेखिका ने निःसंदेह सफलता पाई है। पर-पुरुष या पर-स्त्री से प्रेम की समस्या को लेखिकाने निर्भीकता से उठाया है। आधुनिक आर्थिक कठिनाई के कारण मध्यवर्गीय नारी को घर से बाहर जाना पड़ता है। स्वाभाविक रूप में स्त्री पर-पुरुष के संपर्क में आ जाती है । निकटता के कारण कई संबंध पर स्त्री पुरुषों के मध्य स्थापित होते है। "जाड़े की धूप", "पानी की दीवार", "दूरियाँ" और "एक लड़की दो रूप" आदि उपन्यासों के स्त्री-पुरुष पात्र इसी समस्या के शिकार है। इस आधुनिक युग की समस्या को लेखिकाने बड़े ही सुचारू रूप से सुलझाने का प्रयत्न किया है।

"तलाक समस्या" को लेखिका ने बड़े ही कलात्मक ढंग से उठाया है। संविधान ने स्त्रियों को तलाक का अधिकार प्रदान किया है। लेकिन परंपरा से जुड़ी मध्यवर्गीय भारतीय महिलाएँ तलाक देने या लेने से हिचकती है। पुरुषों से लाखो अन्याय सह सकती हैं किन्तु उनके विरुद्ध आवाज उठा नहीं पाती। "महानगर की मीता" में उन्होंने तलाक समस्या को उठाया है। इसमें प्रेम , विवाह और तलाक तीनों बिन्दुओं को सफलता से उद्घाटित किया है। रजनी जी अधिकतर तलाक के विपक्ष में है और पति-पत्नी में समझ के पक्ष में हैं। इसी कारण उनके अधिक तर उपन्यासों में पति-पत्नी के मध्य तलाक की नौबत नहीं आई। तलाक के अतिरिक्त और भी कई विकल्प होते है ,जिनके सहारे पति-पत्नी के बिगड़ते संबंध ठीक हो जाते है।

"दहेज समस्या" भारतीय समाज को लगी खतरनाक बिमारी है। इस बिमारीने न जाने कितनी लड़कियों का जीवन खिलने के पूर्व ही कुचला दिया है। "एक लड़की दो रूप" की माला की बारात उसके दरवाजे से लौट जाती। जिसके कारण माला की जिंदगी कटी पतंग की तरह हवा में तैरती रही। रजनी जी ने दहेज समस्या की जड़ से उखाड़कर फैंक देने की माँग की है।

इन समस्याओं के अतिरिक्त नौकरी पेशा नारी की समस्या अधिक जटिल है क्योंकि लेखिका स्वयं नौकरी पेशा नारी होने के कारण वह नौकरी पेशा नारी की समस्याएँ हल करने में सफल हो चुकी है। और भी कतिपय समस्याओं का रजनी जी ने अंकन किया है, जिनका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में नारी से संबंध जुड़ा है। इन सभी समस्याओं का सफलता से अंकन करने में और उनका समाधान प्रस्तुत करने में रजनी जी को कमाल की सफलता प्राप्त हो चुकी है।

इस प्रकार रजनी जी की समग्र औपन्यासिक कृतियाँ नारी की आर्थिक और भावनात्मक समस्याओं पर आधारित है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :-

प्रस्तुत प्रबंध में निम्नलिखित विषयों पर स्वतंत्र रूप से अध्ययन हो सकता है ---

१] रजनी पनिकर के उपन्यासों में अभिव्यक्त नारी - समस्याएँ।

२] रजनी पनिकर के साहित्य में आधुनिक बोध।

x-x-x-x-x
x-x-x-x
x-x-x-
x-x
x